ISSN 2454 - 5163

प्रकाशन तिथि : 26 जुलाई 2017, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 36, अंक 1, कुल पृष्ठ 28

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर (राज.)

वीतराग-विज्ञान (408)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन :	251 रुपये
वार्षिक :	25 रुपये
एक प्रति :	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी :	7200
मराठी :	2000
कन्नड़ :	1000
कुल :	10200

आत्मा सर्वसाधन संपन्न है

अनंतशक्तिसंपन्न धर्मी ऐसा आत्मा ही धर्म का साधन है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र सो धर्म है और आत्मा का स्वभाव ही उसका साधन है। स्वामी समन्तभद्राचार्य ने कहा है कि "न धर्मोधार्मिकैर्विना" धर्म धार्मिक के बिना नहीं होता। परमार्थत: धर्म को धारण करने वाला ऐसा जो आत्मा (धर्मी) उसके बिना सम्यग्दर्शनादि धर्म नहीं होता। अनंत गुणों को धारण करने वाला ऐसा आत्मा वह धर्मी है और उसी के आधार से धर्म है। आत्मा स्वयं साधक होकर अपने धर्म को साधता है इसलिये आत्मा साधु है अथवा आत्मा के गुण अपनी-अपनी निर्मल पर्यायों का जतन (रक्षा) करते हैं, इसलिये यति है; पुनश्च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रादि निज ऋद्धि सहित होने से वह ऋषि है। इसप्रकार आत्मा स्वभाव से सर्वसाधन संपन्न है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 540

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 36 (वीर नि. संवत् - 2543) 408 अंक : 1

निरखत जिनचन्द्र वदन...

निरखत जिनचंद्र-वदन, स्वपदसुरुचि आई।।
प्रगटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की।
कला उदोत होत काम जामिनि पलाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।1।।
शाश्वत आनन्दस्वाद पायो विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।2।।
साधी निज साधकी समाधि मोह व्याधि की।
उपाधि को विराधि कैं आराधना सुहाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।3।।
धन-दिन-छिन आज सुगुनि चिंते जिनराज अबै।
सुधरे सब काज दौल अचल ऋद्धि पाई।।
निरखत जिनचंद्र-वदन...।।4।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2017

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 13 अगस्त 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 14 अगस्त 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
मंगलवार 15 अगस्त 2017	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट -(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ले सकते हैं।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- विनीत शास्त्री, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

शुद्धात्मा का ध्यान धर

(१४)

जो इच्छइ णिस्सरिदुं संसारमहण्णवाउ रूद्दाओ।
कम्मिंधणाण डहणं सो झायइ अप्पयं सुद्धं॥

(हरिगीत)

जो भव्यजन संसार-सागर पार होना चाहते।
वे कर्मईंधन-दहन निज शुद्धातमा को ध्यावते॥

जो जीव भयंकर संसाररूपी समुद्र से पार होना चाहते हैं, वे जीव कर्मरूपी ईंधन को जलाने वाले अपने शुद्ध आत्मा का ध्यान करते हैं; क्योंकि **शुद्धात्मा के ध्यानरूपी अग्नि ही कर्मरूपी ईंधन को जलाने में समर्थ होती है। अत: मुमुक्षु का एकमात्र परम कर्तव्य निज शुद्धात्मा का ध्यान ही है।**

यह गाथा अष्टपाहुड़ में समागत मोक्षपाहुड की २६वीं गाथा है। इसमें अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि यदि आप संसार समुद्र से पार होना चाहते हैं, अष्टकर्मों से मुक्त होना चाहते हैं, अनन्त अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो कर्म ईंधन को जलाने में समर्थ शुद्धात्मा का ध्यान करो; क्योंकि केवल शुद्धात्मा का ध्यान ही अनन्त सुख की प्राप्ति का एकमात्र साधन है।

शुभभाव, शुभ शारीरिक क्रियाओं को मुक्ति का साधन माननेवालों को मोक्षपाहुड़ की इस गाथा पर ध्यान अवश्य देना चाहिए; जिसमें अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि **अनन्तसुख की प्राप्ति का उपाय एकमात्र निज शुद्धात्मा का ध्यान ही है।**

अन्य द्रव्यों में विहार मत कर

(१५)

मोक्खपहे अप्पाणं ठवेहि तं चेव झाहि तं चेय।
तत्थेव विहर णिच्चं मा विहरसु अण्णदव्वेसु।।

(हरिगीत)

मोक्षपथ में थाप निज को चेतकर निज ध्यान धर।
निज में ही नित्य विहार कर पर द्रव्य में न विहार कर।।

हे आत्मन् ! तू स्वयं को निजात्मा के अनुभवरूप मोक्षमार्ग में स्थापित कर, निजात्मा का ही ध्यान धर, निजात्मा में ही चेत, निजात्मा का ही अनुभव कर एवं निजात्मा के अनुभवरूप मोक्षमार्ग में ही नित्य विहार कर, अन्य द्रव्यों में विहार मत कर, उपयोग को अन्यत्र मत भटका, एक आत्मा का ही ध्यान धर।

यह समयसार परमागम की ४१२वीं गाथा है। इसमें आचार्यदेव उपदेश दे रहे हैं, आदेश दे रहे हैं कि अपने आत्मा को मोक्षमार्ग में स्थापित कर दे; उसी में चेत, उसी का ध्यान कर, उसमें ही विहार कर; अन्य द्रव्यों में विहार मत कर।

इस गाथा का भाव आचार्य अमृतचन्द्र आत्मख्याति में इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''यद्यपि यह अपना आत्मा अनादिकाल से अपनी प्रज्ञा के दोष से परद्रव्य और राग-द्वेषादि में निरन्तर स्थित है; तथापि हे आत्मन् ! तू अपनी प्रज्ञा के गुण के द्वारा स्वयं को वहाँ से हटाकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र में निरन्तर स्थापित करके, समस्त चिन्ता (चिन्तवन-विकल्प) का निरोध करके अपने में अत्यन्त एकाग्र होकर दर्शन-ज्ञान-चारित्र का ही ध्यान कर तथा समस्त कर्मचेतना और कर्मफलचेतना के त्याग द्वारा शुद्धज्ञानचेतनामय होकर दर्शन-ज्ञान-चारित्र को ही चेत, अनुभव कर तथा द्रव्य के स्वभाव के वश से प्रतिक्षण उत्पन्न होनेवाले परिणामों के द्वारा तन्मय परिणामवाला (दर्शन-ज्ञान-चारित्रवाला) होकर दर्शन-ज्ञान-चारित्र में ही विहार कर तथा एक ज्ञानरूप को ही अचलतया अवलम्बन करता हुआ ज्ञेयरूप समस्त परद्रव्यों की उपाधियों में किंचित्मात्र भी विहार मत कर।''

यद्यपि यह भगवान आत्मा अनादि से ही स्वयं की प्रज्ञा के दोष से अर्थात् स्वयं की ही विभावपरिणमनरूप पर्यायगत योग्यता से स्वयं ही राग-द्वेषरूप परिणम रहा है; तथापि स्वयं ही प्रज्ञा के गुण से अर्थात् स्वयं की ही स्वभावपरिणामरूप पर्यायगत योग्यता से स्वयं को विकारी परिणमन से हटाकर दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणमित कर सकता है।

तात्पर्य यह है कि **न तो इसके विकाररूप परिणमन में किसी पर का कोई दोष है और न स्वभावरूप परिणमन ही कोई और करायेगा। यह स्वयं ही विकारी परिणमन को छोड़कर स्वभावरूप परिणमन कर सकता है। अत: हे आत्मन् ! अब सम्यग्रत्नत्रयरूप परिणमन कर स्वयं को स्वयं ही मोक्षमार्ग में स्थापित कर।**

जिस भगवान आत्मा के आश्रय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उत्पत्ति होती है; समस्त विकल्पों का अभाव करके एकमात्र उसी का ध्यान कर, कर्मचेतना और कर्मफलचेतना के अभावपूर्वक ज्ञानचेतना में ही चेत और निज भगवान आत्मा में ही विहार कर, अन्य द्रव्यों में विहार मत कर; क्योंकि तुझे वहाँ कुछ भी उपलब्ध होनेवाला नहीं है।

अरहंत भगवान भी अपनी दिव्यध्वनि में यही कहते हैं कि तू हमारी ओर क्या देखता है ? स्वयं की ओर देख; क्योंकि निश्चयरत्नत्रय की प्राप्ति तो तुझे स्वयं के ही आश्रय से होगी, हम तो तेरे लिए परद्रव्य ही हैं। तू परद्रव्य में विहार मत कर, स्वयं में ही विहार कर!

इसप्रकार आचार्यदेव यहाँ **अपने उपयोग को समस्त जगत से हटाकर**

आत्मा में ही लगाने की प्रेरणा दे रहे हैं।

इस गाथा में कहा है कि अपनी आत्मा में ही चेत अर्थात् अपनी आत्मा का अनुभव कर। चेतना तीन प्रकार की हैं – कर्मचेतना, कर्मफल-चेतना और ज्ञानचेतना।

करने-करने की धुन सवार होने को कर्मचेतना कहते हैं और कर्मफल भोगने की धुन सवार होने को कर्मफलचेतना कहते हैं और मात्र सहज ज्ञाता-दृष्टा स्वभावरूप रहने को ज्ञानचेतना कहते हैं अर्थात् कर्ता, भोक्ता व ज्ञाता को क्रमश: कर्मचेतनावाला, कर्मफलचेतनावाला और ज्ञानचेतना वाला कहते हैं।

एकेन्द्रियादि जीव को लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक कर्मफलचेतना की प्रधानता है; क्योंकि कीड़े-मकोड़े को जो भी मिलता है, वही खा लेते हैं। उन्हें तो मात्र अनुकूलता-प्रतिकूलता का वेदन होता है। इसप्रकार **एकेन्द्रिय से असैनी पंचेन्द्रिय तक कर्मफलचेतना की ही प्रधानता है।**

फिर सैनी पंचेन्द्रिय होकर जो मनुष्य **बड़े-बड़े नेता बन जाते हैं, उनमें कर्मचेतना की प्रधानता पाई जाती है।**

ज्ञानचेतना वाले हैं जो यह मानते हैं कि जो होना होगा वह पर्याय की योग्यता के अनुसार होगा, मैं तो मात्र सहज ज्ञाता-दृष्टा हूँ।

जो लोग ऐसा कहते हैं कि मैं न तो ज्ञाता-दृष्टा हूँ और न ही मैं कर्ता हूँ और न भोक्ता हूँ। तो उनके लिए कहते हैं कि वे पुद्गल हैं, क्योंकि वे सभी का निषेध कर रहे हैं।

किसी अपेक्षा से पर को जानने का निषेध भी है, क्योंकि **क्षयोपशमज्ञान में दो काम एकसाथ नहीं हो सकते।**

जिनवाणी में ऐसा उपदेश कदम-कदम पर मिलेगा कि तू अपने भगवान आत्मा को जान और इस जगत से दृष्टि हटा। जगत को तो बहुत बार जाना, लेकिन उसके जानने से तुम्हें आज तक क्या मिला ? यह

उपदेश की भाषा है, तत्त्वप्रतिपादन की नहीं।

तत्त्वप्रतिपादन में तो ऐसा कहेंगे कि केवलज्ञान में सारा लोकालोक एकसाथ झलकता है; इसलिए केवलज्ञान में तो यह प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता कि किसे जाने और किसे नहीं जाने? यह प्रश्न तो क्षयोपशमज्ञान में ही संभव है; परन्तु क्षयोपशमज्ञान की प्रत्येक समय की पर्याय में यह योग्यता तो अनादिकाल से ही सुनिश्चित है कि वह कब और किसको जाने।

अतएव इसमें कर्तृत्व का अभिमान नहीं होना चाहिए कि **मैंने ऐसा किया, तो ऐसा हुआ। अरे ! तुम्हारा ऐसा होना था, इसलिए ऐसा हुआ।**

पण्डित टोडरमलजी कहते हैं – भली होनहार है; इसलिए जिस जीव को ऐसा विचार आता है...अर्थात् जिनके संसार समुद्र का किनारा निकट आ गया है, उन्हीं को ऐसी बुद्धि आती है, इसलिए पर में कर्तृत्व का अभिमान नहीं करना।

अतएव ४१२ गाथा में कहा है कि अपने भगवान आत्मा में ही विहार करो अर्थात् अपने भगवान आत्मा को ही जानो।

समयसार को सुनकर कोई यह कहे कि हम स्त्री, पुत्र, मकान, जायदाद छोड़कर साधु बनने को तैयार हैं तो समयसार उसकी समझ में नहीं आता; क्योंकि समयसार में तो यह कहा है कि ये स्त्री, पुत्र, मकान, जायदाद तुम्हारे हैं ही नहीं। आत्मा तो त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति से युक्त है अर्थात् आत्मा ने आजतक किसी पर का न कुछ ग्रहण किया और न ही कुछ छोड़ा है।

इसलिए आचार्यदेव गाथा नं. ४१२ में कहते हैं कि अन्य सभी विकल्पों को तोड़कर **अपनी आत्मा में ही स्थिर हो जाओ और उसी का ही ध्यान करो।**

वास्तव में यह ध्यान भी करने की चीज नहीं, अपितु होने की चीज है। यह करने की भाषा तो उपदेश की भाषा है। **समयसार की भाषा तत्त्व प्रतिपादन की भाषा है, द्रव्यानुयोग की भाषा है।**

'ऐसा होता है' – यह करणानुयोग की भाषा है, 'ऐसा हुआ' – यह प्रथमानुयोग की भाषा है, 'ऐसा करना चाहिए' – यह चरणानुयोग की भाषा है और 'वस्तुस्वरूप ऐसा है' – यह द्रव्यानुयोग की भाषा है।

समयसार में द्रव्यानुयोग की भाषा का प्रयोग करते हुए आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि **मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ और आत्मानुभूति से प्राप्त होनेवाला तत्त्व हूँ।**

यहाँ तो स्पष्टरूप से उपदेश की भाषा में कह रहे हैं कि हे आत्मन् ! तू स्वयं को मोक्षपथ में स्थापित कर, निज आत्मा का ही ध्यान धर, निजात्मा में ही चेत, निजात्मा का अनुभव कर; अपने आत्मा में ही विहार कर, अन्य द्रव्यों में विहार मत कर।

प्रत्येक आत्मार्थी मुमुक्षु भाई-बहिन का परम कर्त्तव्य है कि वह आचार्य का उपदेश/आदेश का अक्षरशः पालन करें। **(क्रमशः)**

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें। ● अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अतः समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें।

● टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **– महामंत्री**

संपर्क सूत्र – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)** 302015 **फोन नं.** – 0141-2705581, 2707458,
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

छहढाला प्रवचन

सम्यग्ज्ञानपूर्वक चारित्र का उपदेश

सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ चारित्र लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।।
त्रस हिंसा को त्याग, वृथा थावर न संहारै।
परवध कार कठोर निंद्य, नहिं वचन उचारै।।१०।।
जल मृतिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता।
निज बनिता बिन सकल, नारि सौं रहैं विरत्ता।।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिश गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखैं।।११।।
ताहू में फिर ग्राम, गली गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान, ठान अन सकल निवारा।।
काहू की धनहानि, किसी जय हार न चिन्तैं।
देय न सो उपदेश, होय अघ बनज कृषी तैं।।१२।।
कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे जस लाधै।।
राग-द्वेष करतार, कथा कबहूँ न सुनीजै।
और हु अनरथदंड हेतु अघ, तिन्है न कीजै।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

श्रावक के चारित्र में बारह व्रत होते हैं, उनके तीन भाग हैं – पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत। इसके उपरान्त उसको सदैव सल्लेखना की-समाधि मरण की भावना होती है। अहिंसादि पाँच अणुव्रत और दिग्व्रतादि तीन

गुणव्रत का वर्णन इन चार छन्दों में है। दिग्व्रत, देशावकाशिकव्रत और अनर्थदण्ड-त्यागव्रत – ये तीनों अहिंसादिव्रत की पुष्टि करनेवाले हैं-गुण करने वाले हैं-रक्षा करनेवाले हैं, अत: इन्हें 'गुणव्रत' कहा जाता है तथा सामायिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग परिमाण और अतिथि संविभागरूप वैयावृत्य – ये चार व्रत मुनिपने के अभ्यासरूप है, मुनिपने की शिक्षा देनेवाले हैं, इसलिए इन्हें शिक्षाव्रत कहा जाता है।

१. अहिंसा-अणुव्रत – आत्मानुभव उपरान्त अप्रत्याख्यान संबंधी कषायों का भी अभाव होने से जिसकी आत्मा की शान्ति विशेष बढ गयी है, ऐसे पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक को संकल्पपूर्वक होनेवाली त्रसहिंसा का परिणाम नहीं होता। जिसमें सीधी त्रसहिंसा होती हो ऐसी प्रवृत्ति में वह नहीं पड़ता, त्रसहिंसा वाला भोजन वह नहीं खाता।

यद्यपि सामान्य गृहस्थ अथवा सज्जन आर्य मनुष्य को भी त्रसहिंसा के परिणाम नहीं होते; परन्तु इस व्रती श्रावक को तो उसका नियमपूर्वक त्याग होता है। इसीतरह वह स्थावर जीवों की भी बिना प्रयोजन हिंसा नहीं करता, उनकी हिंसा से भी यथाशक्ति बचने की सावधानी रखता है। विरोधी हिंसा अर्थात् किसी दुष्ट जीव द्वारा या शत्रु द्वारा धर्म के ऊपर, राष्ट्र के ऊपर अथवा स्त्री-पुत्रादि के ऊपर आक्रमण हो तो ऐसे प्रसंगों पर स्व रक्षा के अर्थ, विवश होकर सामनेवाले जीव को मारने का प्रसंग आ पड़े तो ऐसी हिंसा का त्याग इस श्रावक को नहीं होता-मात्र स्व रक्षा का ही अभिप्राय होता है। ऐसी हिंसा के परिणाम के समय भी अनन्तानुबंधी या अप्रत्याख्यान संबंधी राग-द्वेष उसको नहीं होते अर्थात् दो कषाय के अभावरूप वीतरागी शुद्धता उसे सदा बनी रहती है और इतनी शुद्धता रखते हुए जो हिंसादि परिणाम होते हैं, वे अतिअल्प होते हैं, स्थूल हिंसादि के परिणाम तो उसको होते ही नहीं – ऐसी दशा का नाम अहिंसा अणुव्रत है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रकट करके धर्मी जीव को ऐसे अहिंसाव्रत का पालन योग्य है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

शुद्ध आत्मा को कर्तृत्व का अभाव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ७७ से ८१ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथाएं मूलत: इसप्रकार हैं –

णाहं णारयभावो तिरियत्थो मणुवदेवपज्जाओ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७७।।
णाहं मग्गणठाणो णाहं गुणठाण जीवठाणो ण।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७८।।
णाहं बालो वुड्ढो ण चेव तरुणो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७९।।
णाहं रागो दोसो ण चेव मोहो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।८०।।
णाहं कोहो माणो ण चेव माया ण होमि लोहो हं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।८१।।

(हरिगीत)

मैं नहीं नारक देव मानव और तिर्यग मैं नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।७७।।
मार्गणास्थान जीवस्थान गुणथानक नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।७८।।
बालक तरुण बूढा नहीं इन सभी का कारण नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।७९।।
मैं मोह राग द्वेष न इन सभी का कारण नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।८०।।
मैं मान माया लोभ एवं क्रोध भी मैं हूँ नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।८१।।

नरक पर्याय, तिर्यंच पर्याय, मनुष्य पर्याय और देव पर्यायरूप मैं नहीं हूँ। इन पर्यायों का करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मार्गणास्थान, गुणस्थान और जीवस्थान भी मैं नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं बालक, वृद्ध या जवान भी नहीं हूँ और इन तीनों का कारण भी नहीं हूँ। उन तीनों अवस्थाओं का करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं मोह, राग और द्वेष नहीं हूँ, इनका कारण भी नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं क्रोध, मान, माया और लोभ भी नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

(गतांक से आगे....)

शुद्धनिश्चयनय से जीव को मायामिश्रित अशुभ परिणाम का अभाव होने से तिर्यंच पर्याय नहीं है।

तिर्यंचपर्याय के योग्य मायामिश्रित अशुभकर्म का अभाव होने से मैं सदा तिर्यंचपर्याय के कर्त्तृत्वविहीन हूँ।

जो जीव कपट के परिणाम करता है वह तिर्यंच होता है। उसका शरीर भी टेढ़ा होता है – जैसे गाय, भैंस, घोड़ा आदि जीव। सम्यक्त्वी विचारता है कि पशु के योग्य अशुभ कर्म मैं करता नहीं, मेरे में माया है ही नहीं, इसलिए माया के निमित्त से बँधनेवाले कर्म मेरा स्वरूप नहीं। मैं सदा तिर्यंचपर्याय के कर्त्तृत्वपने से रहित हूँ और उनका मैं कारण भी नहीं, मैं तो शुद्धचैतन्यस्वभावी हूँ।

शुद्धनिश्चयनय से जीव को मनुष्य के योग्य भावकर्म का अभाव होने से मनुष्यपर्याय नहीं है।

मनुष्य नामकर्म के योग्य द्रव्यकर्म तथा भावकर्म का अभाव होने के कारण मुझे मनुष्यपर्याय निश्चय से नहीं है।

जिसप्रकार के भाव से मनुष्यगति मिलती है, उस भाव का ही शुद्ध आत्मा में अभाव है, इसलिए मेरे मनुष्यपर्याय नहीं है – ऐसा धर्मीजीव विचारता है।

यहाँ कोई पूछे कि मनुष्यपर्याय से धर्म और केवलज्ञान प्राप्त होता है न?

समाधान :– धर्म अवस्था या केवलज्ञान अवस्था आत्मा से होती है। शरीर की पुष्टता से केवलज्ञान नहीं होता, मनुष्य शरीर का आत्मा में अभाव है। जब जीव केवलज्ञान प्रगट करे तब मनुष्य शरीर को निमित्त कहा जाता है। वस्तुस्वभाव के लक्ष्य से केवलज्ञान प्रगट कर वह निश्चय है और तब मनुष्य शरीर को निमित्तरूप में व्यवहार से कहा जाता है। निश्चय के बिना अकेले व्यवहार को पकड़ेगा तो व्यवहार ही निश्चय बन जावेगा।

शुद्धनिश्चयनय से जीव को देव के योग्य पुद्‌गलद्रव्य का अभाव होने से देवपर्याय नहीं है।

देव ऐसे नाम की आधार जो देवपर्याय उसके योग्य सरस, सुगन्ध-स्वभाव वाले पुद्‌गलद्रव्य के सम्बन्ध का अभाव होने से निश्चय से मेरे में देवपर्याय नहीं है।

देवशरीर के परमाणु सरस और सुगन्धित होते हैं, ऐसे पुद्‌गलद्रव्य के सम्बन्ध का आत्मा में अभाव है; इसलिए आत्मा को देवपर्याय नहीं है। मैं तो शुद्ध चैतन्यस्वभावी हूँ – ऐसा धर्मीजीव विचारता है। निश्चय का ज्ञान करने पर ही व्यवहार का ज्ञान सच्चा कहा जाता है। जैसे कुम्भकार ने घड़ा बनाया – ऐसी भाषा बोली जाती है, उसका अर्थ यह है कि

मृत्तिका स्वयं सामान्य में से घड़ा विशेषरूप से परिणामी है। कुम्भकार ने घड़ा बनाया नहीं है, इसप्रकार समझे तो समझना सही है। कुम्भकार ने घड़ा बनाया, ऐसा कहना तो उपचार है। उसीतरह देवपर्याय शरीर के कारण हुई है, आत्मा के कारण नहीं; अतः धर्मीजीव कहता है कि मेरे देवपर्याय नहीं है।

इसप्रकार सम्यग्दृष्टि जीव की प्रतिक्रमण करते समय कैसी दशा होती है, वह बतलाते हैं। चैतन्य ज्ञायकस्वभावी आत्मा हूँ – ऐसे अस्ति स्वभाव में अनेक भेद नहीं हैं, यह नास्ति से समझाया है। शुद्धचैतन्य की एकाग्रता में भेदों का अभाव है; परन्तु भेदों का अभ्यास कराने के लिए 'यह मैं नहीं हूँ' ऐसा कहने में आता है।

धर्मीजीव रागादि भेदों को नहीं करता, वह शुद्धचैतन्य को भाता है।

''मैं रागादि भेदरूप भावकर्म के भेदों को नहीं करता, सहजचैतन्य के विलासस्वरूप आत्मा को ही भाता हूँ।''

आत्मा शुद्धचैतन्यस्वरूप है, वह रागद्वेषादि भावकर्म को नहीं करता है। धर्मीजीव सहज चैतन्यविलासस्वरूप को भाता है। शुद्ध चैतन्यस्वभाव त्रिकालीद्रव्य है और उसकी निर्विकल्पपने भावना भाना मोक्षमार्ग है। मैं विकाररूप से होने वाला नहीं, असंख्य प्रकार के पड़ने वाले भेद मेरे कार्य नहीं, मैं स्वभाव-सन्मुख एकाग्रता की भावना भाता हूँ।

जिसको अपने आत्मा की सर्वज्ञशक्ति का भरोसा है, वही जीव भगवान को यथार्थ जानता है। **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

समयसार कलश 262

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को इसी अंक से क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। भूमिका के रूप में समयसार कलश 262 व 263 से प्रारम्भ किया गया प्रकरण पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

(गतांक से आगे....)

यहाँ यह बात आचार्य प्रश्नोत्तर के रूप में स्पष्ट करते हैं –

प्रश्न – आत्मा अनेकान्तमय अर्थात् अनन्तधर्मात्मक होते हुए भी यहाँ उसे 'ज्ञानमात्र' क्यों कहा गया है? 'ज्ञानमात्र' कहने से क्या अन्य धर्मों का निषेध नहीं समझ लिया जायेगा? जब आत्मा में तत्-अतत्, एक-अनेक, सत्-असत्, नित्य-अनित्य आदि अनन्त धर्म स्वयं ही प्रकाशित होते हैं तो फिर 'आत्मा ज्ञानमात्र' है – ऐसा कहने का आपका क्या प्रयोजन है?

उत्तर – लक्षण की प्रसिद्धि के द्वारा लक्ष्य की प्रसिद्धि करने के लिए आत्मा को 'ज्ञानमात्र' कहा गया है, ज्ञान आत्मा का असाधारण गुण है। इसकारण ज्ञान की प्रसिद्धि द्वारा आत्मा की प्रसिद्धि होती है।

अहा! ज्ञानस्वरूप आत्मा को रागादि से भिन्न जानकर शुद्ध एक आत्मा को प्रसिद्ध करता है। हाँ, यहाँ इतना ध्यान रखें कि – परलक्ष्यीज्ञान आत्मा का लक्षण नहीं है, बल्कि अन्तर्मुख होकर जो ज्ञान आत्मा को जानता है, वह ज्ञान आत्मा का लक्षण है और वही आत्मा को प्रसिद्ध करता है। जो ज्ञान शुद्ध आत्मा को जाने ही नहीं और पर में या रागादि में ही एकाकार होकर प्रवर्तता है, वह ज्ञान तो वस्तुतः ज्ञान ही नहीं है;

क्योंकि वह शुद्ध आत्मा की प्रसिद्धि नहीं करता। वह तो मात्र पर को ही प्रकाशित करता है।

यह शरीर तो जड़-पुद्गलकर्म है और रागादिभाव भी आत्मा से विपरीत स्वभाववाले हैं; इसकारण शरीर व रागादि आत्मा के लक्षण नहीं हैं। एक ज्ञान ही आत्मा का असाधारण गुण है, अत: ज्ञान ही आत्मा का लक्षण है। **असाधारण का अर्थ है – ऐसा विशेष गुण, जो आत्मा को उसके, अनन्तधर्मों से पृथक् करता है।** आत्मा के अनन्तगुणों में एक ज्ञान ही स्व-पर प्रकाशक है। इससे ज्ञानगुण असाधारण है। इससे भगवान आत्मा को ग्रहण कर सकते हैं। इसप्रकार ज्ञानलक्षण आत्मा की परम प्रसिद्धि का साधन है। **ज्ञान आत्मा को पहचानने का साधन होने से आत्मा को ज्ञानमात्र कहा गया है।**

अहा! 'ज्ञान....ज्ञान....ज्ञान... जानपना ही आत्मा है। पहले अभेद आत्मा में ऐसा ज्ञान लक्षण और आत्मा लक्ष्य का भेद किया जाता है। तत्पश्चात् वृत्ति लक्ष्य में अन्तर्मुख होने पर आत्मा प्रसिद्ध हो जाता है – इसी का अर्थ है लक्षण से लक्ष्य की प्रसिद्धि होती है।

लक्षण अर्थात् ज्ञान की वर्तमान दशा तथा लक्ष्य अर्थात् शुद्ध आत्मा। लक्षण के रूप में जब प्रसिद्ध ज्ञान की वर्तमान पर्याय अन्तर्मुख होकर शुद्धात्मा को जानती है तो लक्ष्य की भी प्रसिद्धि हो जाती है।

ज्ञान की वर्तमान पर्याय जो आत्मा का लक्षण है, वह प्रगट है तथा उसके द्वारा अप्रगट (शक्तिरूप) लक्ष्य शुद्धात्मा जाना जाता है। अहा! त्रिकाली ज्ञायक...स्वरूप आत्मा (लक्ष्य) तो प्रगट नहीं है; परन्तु लक्षण प्रगट है, उसमें आत्मापन की पहचान होना ही लक्षण की प्रसिद्धि से लक्ष्य की प्रसिद्धि होना कहलाता है। बस, इसीलिए आत्मा को ज्ञानमात्र संज्ञा प्राप्त है।

(क्रमश:)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : यदि ऐसा है, तो हम क्या समझें ?

उत्तर : देखो ! यद्यपि कलश टीकाकार ने यहाँ काललब्धि की मुख्यता से व्याख्यान किया है, तथापि बिना पुरुषार्थ के किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती – यह भी उतना ही बड़ा सिद्धान्त है। आत्मप्राप्ति के प्रसंग में तो इसकी ही मुख्यता करना योग्य है। यहाँ यह बात तो विचार करने योग्य है ही कि आत्मप्राप्ति के प्रसंग में सम्यक् पुरुषार्थ क्या है ? बिना सम्यक् पुरुषार्थ के आत्मप्राप्ति संभव नहीं है। परन्तु फिर भी इतनी बात तो सिद्ध है ही कि बिना पुरुषार्थ के आत्मप्राप्ति नहीं होगी।

अब यह तो विश्वास हो ही जाना चाहिये कि मेरा स्वकाल आ गया है और सब अवसर आ गये हैं, अब मुझे सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा सम्यग्दर्शन प्राप्त करना योग्य है। सारा जगत अपनी रुचती बात का तो विश्वास तुरन्त ही करता है, परन्तु इस सम्यक् पुरुषार्थ की बात का विश्वास नहीं करता। कैसी विचित्र बात है कि जो कार्य इससे हो नहीं सकता, जिसे कर नहीं सकता, उसका तो तुरन्त विश्वास करके पुरुषार्थ करता है; परन्तु जो वस्तु अपनी है, अपने से हो सकती है, उसका न विश्वास करता है और न उसका पुरुषार्थ करता है। इसलिये भाई ! तू तो ऐसी श्रद्धा कर कि मैं तो संसार-सागर से तिरने के मार्ग पर ही जा रहा हूँ, मेरा संसार-भ्रमण समाप्ति पर है। अत: भव रहित स्वभाव की दृष्टि करके अपना हित कर लेना चाहिये।

प्रश्न : पांडे राजमलजी काललब्धि को जहाँ-तहाँ क्यों कहते हैं ?

उत्तर : पाँचों समवाय साथ ही हैं। राजमलजी को काललब्धि सिद्ध करना है। मैं तो पहिले से ही कहता हूँ कि जिस काल में जो होना है, वही होता है। जो स्वभाव की दृष्टि करता है, उसको काललब्धि का सच्चा ज्ञान होता है।

समाचार दर्शन -

अमेरिका में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

अमेरिका के अनेक प्रांतों में डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

(1) डलास : यहाँ डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा जिनेन्द्र वंदना पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा योगसार, तत्त्वार्थसूत्र एवं गुणस्थान विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा भक्तामर स्तोत्र व प्रवचनसार (गाथा-93) पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। यहाँ डॉ.संजीवजी गोधा एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री के सान्निध्य में दो दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें भक्तामर मंडल विधान सहित 9-9 घंटे तत्त्वज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। **– अतुल खारा**

(2) राले (नॉर्थ केरोलिना) : यहाँ डॉ.संजीवजी गोधा एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामर स्तोत्र के आधार से प्रवचन हुये। ज्ञातव्य है कि यहाँ फादर्स डे (18 जून) पर एक विशेष आयोजन रखा गया, जिसमें सकल जैन समाज की उपस्थिति में डॉ.संजीवजी गोधा का मार्मिक व्याख्यान हुआ।

(3) शिकागो : यहाँ दिनांक 15 से 21 जून तक **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा एक सप्ताह तक भेदविज्ञान एवं आत्मानुभूति विषय पर मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 22 से 30 जून तक **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** द्वारा अर्थ सहित नित्य-नियम पूजन के अतिरिक्त प्रात: समयसार के संवर अधिकार पर एवं सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र के पाँच अध्यायों पर प्रवचन हुये। दिनांक 24 व 25 जून को मंदिर स्थापना दिवस के 24वें वार्षिकोत्सव का विशेष आयोजन हुआ, जिसमें जिनमंदिर के वेदी एवं शिखर पर ध्वज परिवर्तन एवं नवनिर्मित जिनवाणी वेदी पर विधिपूर्वक समयसार एवं प्रवचनसार ग्रन्थाधिराज विराजमान किये गये। इस प्रसंग पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सकल जैन समाज के बीच 1200-1500 लोगों की उपस्थिति में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का जैनी कौन एवं कैसे? विषय पर मार्मिक प्रवचन हुआ। दिनांक 10 से 14 जुलाई तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा समयसार का सार एवं समयसार के 168वें कलश पर प्रवचन हुये।

(4) क्लीवलैण्ड : यहाँ दिनांक 23 से 30 जून तक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय, ध्यान विधि एवं फल पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) ह्यूस्टन : यहाँ दिनांक 16 से 18 जून तक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा भक्तामर स्तोत्र पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(6) मयामी : यहाँ जैन सेन्टर ऑफ साउथ फ्लोरिडा में दिनांक 26 मई से 1 जून तक

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रतिदिन प्रात: कर्म की दस अवस्थाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विशेष बात यह है कि यहाँ दिनांक 30 मई को श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर प्रासंगिक प्रवचन हुआ। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इससे पहले यहाँ कभी इस पर्व के बारे में चर्चा भी नहीं हुई। अधिकतम लोगों ने तो श्रुतपंचमी का नाम भी नहीं सुना था।

(7) ऑरलेन्डो : यहाँ ओल्ड एज कम्यूनिटी, शांति निकेतन में दिनांक 2 से 5 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रथमबार किसी जैन विद्वान के प्रवचन हुये। सभा में जैन-अजैन सभी लोगों के बीच ईश्वर के अकर्त्तावाद एवं द्रव्य-गुण-पर्याय के स्वरूप पर मार्मिक प्रवचन हुये।

JAINA CONVENTION एवं जाना शिविर

(8) जाना शिविर – जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा दिनांक 4 से 9 जुलाई तक श्री अतुलभाई खारा के निर्देशन में वार्षिक शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिदिन प्रात: प्रवचनसार महामंडल विधान के अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये; साथ ही डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा 47 शक्तियों पर तथा पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा समयसार (सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार) पर मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकाल चारों विद्वानों के सान्निध्य में शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रसंग पर बच्चों की कक्षा श्रीमती अणिमाजी नागपुर द्वारा ली गई। एक दिन बच्चों द्वारा बहुत सुन्दर प्रस्तुति दी गई। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती पर निर्मित वीडियो 'समय की ओर' को बड़ी स्क्रीन पर दिखाया गया।

इसी प्रसंग पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित जिनेन्द्र वंदना व महावीर वंदना श्री गौरव सौगानी की आवाज में पुन: रिकॉर्डिंग कर सी.डी. के रूप में विमोचन किया गया। इसके अतिरिक्त ग्रंथाधिराज समयसार पर बनाये गये मोबाईल एप का भी उद्घाटन हुआ। ज्ञातव्य है कि सी.डी. एवं मोबाईल एप का निर्माण **'JAANA'** द्वारा कराया गया।

(9) JAINA CONVENTION - न्यूजर्सी में दिनांक 1 से 4 जुलाई तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'मैं कौन हूँ' एवं 'जैनदर्शन के कलात्मक विज्ञान' विषय पर रोचक प्रवचन हुये तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के 'जैनदर्शन एवं विज्ञान' तथा 'हमारी समस्याएं व समाधान' विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुये। पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा 'जैन आचार विज्ञान' विषय पर प्रवचन हुआ। एक दिन विशेष रूप से दिगम्बर जैन अनुयायियों के लिये 3 घंटे पूजन का आयोजन रखा गया, जिसमें भट्टारक चारुकीर्तिजी मूढबिद्री, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर, पण्डित महेशजी जैन सतना एवं पण्डित अभयजी दगड़े का सहयोग प्राप्त हुआ। इसके समस्त कार्य श्री राजीवजी पाण्ड्या न्यूयार्क के निर्देशन में हुये।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वाग्पटुता हेतु साप्ताहिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में रविवार, दिनांक 2 जुलाई को 'हम और हमारा महाविद्यालय' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं सभी शिक्षकगण उपस्थित थे।

शनिवार, दिनांक 8 जुलाई को सत्र के प्रारम्भ में गोष्ठी की उद्घाटन सभा हुई, जिसमें सभी शिक्षणगणों के अतिरिक्त राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के एचओडी श्री अनिलकुमारजी एवं उद्योगपति श्री प्रकाशचंदजी उपस्थित थे।

गोष्ठी का परिचय पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने दिया। छात्रों के वक्तृत्व के विकास के लिये श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अनिलकुमारजी एवं श्री प्रकाशचंदजी ने मार्गदर्शन दिया।

रविवार, दिनांक 9 जुलाई को पण्डित नीतेशजी शास्त्री की अध्यक्षता एवं श्री अनिलकुमारजी के मुख्य आतिथ्य में वीरशासन जयंती के पावन प्रसंग पर 'वीर शासन जयंती' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। वक्तागणों द्वारा दिगम्बरत्व की सनातन रीति पर अत्यंत सुन्दर चिन्तन प्रस्तुत किया गया। गोष्ठी में स्वानुभव जैन (उपाध्याय कनिष्ठ), सजल जैन (शास्त्री प्रथमवर्ष) एवं चैतन्य मांगुलकर (शास्त्री प्रथमवर्ष) को श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चयनित किया गया।

गोष्ठी एवं उद्घाटन सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जिनकुमारजी शास्त्री, गौरवजी शास्त्री, अच्युतकांतजी शास्त्री, जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, कु.प्रतीति पाटील आदि विद्वत्गण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संयोजन व संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

देखो, तत्त्वविचार की महिमा !

देखो, तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचार रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरण आदि करे, उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इसके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है।

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260

अष्टाह्निका पर्व सानन्द संपन्न

(1) **ग्वालियर-मुरार (म.प्र.) :** यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली द्वारा तीनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर प्रवचन हुये, जिसका शताधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

(2) **दिल्ली :** यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 1 से 8 जुलाई तक श्री नियमसार महामंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित निर्मलकुमारजी सिंघई सागर एवं स्थानीय विद्वान पण्डित राकेशजी शास्त्री और पण्डित संदीपजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। दिनांक 9 जुलाई को वीर शासन जयंती के अवसर पर पण्डित निर्मलजी के प्रवचनोपरांत प्रो. सुदीपजी जैन ने भगवान महावीर के सिद्धांतों से अवगत कराया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित राकेशजी शास्त्री द्वारा कु. ईर्या जैन शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

(3) **मुम्बई :** यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 1 से 8 जुलाई तक विभिन्न उपनगरों में से सीमंधर जिनालय में ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, मलाड (ईस्ट) में पण्डित ज्ञायकजी जैन मुम्बई, बोरीवली में पण्डित मनीषजी जैन इन्दौर, भायन्दर में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, दादर में पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, मलाड (वेस्ट) में पण्डित अभिनवजी शास्त्री जबलपुर, दहीसर में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, वसई में पण्डित राजेशभाई शेठ व पण्डित जिनेशभाई शेठ द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

(4) **ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) :** यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर डॉ.दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा प्रात:काल समयसार, दोपहर में चरणानुयोग एवं स्वास्थ्य रक्षा तथा सायंकाल रत्नकरण्डश्रावकाचार प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) **जबलपुर (म.प्र.) :** यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 1 से 8 जुलाई तक श्री नियमसार मण्डल विधान हुआ एवं दोनों समय पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर के प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा श्री प्रशांत जैन, श्री राजीव जैन व श्री अजित जैन के सहयोग से संपन्न हुये। **– अशोक जैन (अध्यक्ष)**

(6) **गढाकोटा (म.प्र.) :** यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित सुरेशजी पिपरा टीकमगढ वालों द्वारा दोनों समय नियमसार ग्रंथ पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(7) **उदयपुर (राज.) :** यहाँ श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर

पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा इन्द्रध्वज विधान करवाया गया तथा दोनों समय विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(8) अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मंडी स्थित सीमंधर जिनालय में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री भक्तामर मंडल विधान व नंदीश्वर पंचमेरु संबंधी विशेष पूजन महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा द्वारा प्रात: समयसार पर प्रवचन, दोपहर में श्री जैन सिद्धांत प्रश्नोत्तरमाला की कक्षा एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित यशजी शास्त्री कोटा द्वारा श्रीमती सरोज पाण्ड्या व श्रीमती अर्चना जैन के सहयोग से संपन्न हुये। **– प्रकाश पाण्ड्या, अजमेर**

बाल एवं युवा जैन संस्कार शिविर संपन्न

(1) शाहगढ (म.प्र.) : यहाँ एक्सीलेन्स स्कूल में दिनांक 8 से 13 जून तक बाल एवं युवा जैन संस्कार शिक्षण शिविर का समापन समारोह संपन्न हुआ।

दिनांक 13 जून को समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षता श्री सेठ बाबूलालजी शाहगढ ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सीएमओ सर मिथलेशजी गिरि, श्री दामोदरजी सेठ, श्री पदमजी सेठ, श्री विनोदजी डेवडिया शाहगढ, श्री पदमचंदजी पनवारीवाले घुवारा आदि महानुभाव एवं समस्त विद्वत्गण मंचासीन थे। सभी का सम्मान अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं मुमुक्षु मण्डल शाहगढ के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण घुवारा एवं शाहगढ के बच्चों द्वारा नृत्य के माध्यम से किया गया। स्वागत भाषण शिविर के मुख्य संयोजक अमितजी जैन अरिहंत मडावरा ने दिया एवं पण्डित निलयजी शास्त्री बरायठा ने शिविर की उपयोगिता पर अपने विचार रखे। शिविर के संयोजक अमित जैन अरिहंत, अनुराग शास्त्री, देवांश सेठ, संदीप शास्त्री थे। सभा का संचालन पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर ने किया।

(2) टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ ज्ञान मन्दिर में दिनांक 8 से 16 जून तक 13वाँ बाल शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित यशजी करेली ध्रुवधाम एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में शताधिक बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। शिविर के संयोजक श्री रोहित वैशाखिया गुड्डू, श्री अंकितजी वैद्य, श्री सुजयन्तजी जैन थे। शिविर के बीच में एक दिन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर ने शाश्वतधाम का परिचय एवं आमंत्रण भी दिया।

– संजय जैन हल्ले, टीकमगढ

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

अत्यंत हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के विद्यार्थियों ने वरिष्ठ उपाध्याय (बारहवीं) की परीक्षा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त किये हैं, जिनमें समर्थ जैन विदिशा (88.6%) ने प्रथम स्थान, दुर्लभ जैन गुड़ाचन्द्रजी (88.4%) ने द्वितीय स्थान एवं विनय जैन मुम्बई (86%) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

परीक्षा में कुल 42 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी जिसमें से 37 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से एवं 5 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी से उत्तीण हुये। इसके अतिरिक्त 14 विद्यार्थियों ने 80% से अधिक, 16 विद्यार्थियों ने 70% से अधिक तथा 7 विद्यार्थियों ने 60% से अधिक अंक प्राप्त किये हैं। ज्ञातव्य है कि समर्थ जैन ब्र. सुमतप्रकाशजी का भतीजा एवं दुर्लभ जैन डॉ.वीरसागरजी दिल्ली का भतीजा है। खनियांधाना (म.प्र.) में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में दिनांक 25 मई को संकल्प दिवस के अवसर पर इन दोनों विद्यार्थियों को डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से पुरस्कृत किया गया।

इसके अतिरिक्त आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा एवं आचार्य अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा के विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम भी शत-प्रतिशत रहा है।

सभी विद्यार्थियों को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय परिवार एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

आपका छोटा सा प्रयास तत्त्वप्रचार में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है

हम डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समस्त प्रवचनों का संकलन, ऑडियो सम्पादन व प्रसार कर रहे हैं।

विगत 50 वर्षों में डॉ.भारिल्ल ने विभिन्न अवसरों पर देश के विभिन्न स्थानों पर जाकर विविध विषयों पर अनेकों प्रवचन व प्रवचन शृंखलाएं संपादित की हैं। यदि आपके पास डॉ.भारिल्ल के ऐसे पुराने प्रवचनों की रिकॉर्डेड कैसेट हों तो कृपया एक कॉपी हमें भेज दें।

यदि आपके पास कॉपी करने की सुविधा उपलब्ध न भी हो तो कृपया हमें प्रवचनों के विषय, काल और स्थान की जानकारी अवश्य दें। हम उनकी कॉपी करवाने की व्यवस्था करेंगे। उक्त सामग्री में से अनुपलब्ध सामग्री का सम्पादन व क्वालिटी संवर्धन करके हम वह सर्वसामान्य को उपलब्ध करवायेंगे। आपका यह छोटा सा प्रयास व सहयोग महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सामग्री जन-जन तक पहुंचाने में आपका महत्वपूर्ण सहयोग होगा।

– कार्यकारी महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

संपर्क सूत्र – रूपेन्द्र शास्त्री, वाट्सएप नं.- 8233372891 **E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

समयसारमय हो जग सारा

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित '**समयसारमय हो जग सारा**' योजना के अन्तर्गत दिनांक 1 से 8 जुलाई तक अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर अनेक स्थानों पर श्री समयसार महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

(1) मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी द्वारा पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा के सहयोग से संपन्न हुये।

– सौरभ जैन, मेरठ

(2) भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय देवनगर में पण्डित निखिलजी शास्त्री द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। इस अवसर पर प्रात:काल पण्डित विजयजी शास्त्री और पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री द्वारा पूजन-विधान एवं दोपहर व रात्रि में कक्षाओं का आयोजन किया गया। **– पुष्पेन्द्र जैन, भिण्ड**

(3) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में विधान का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पण्डित अशोकजी 'वैभव' द्वारा प्रवचन हुये। **– अशोक जैन 'वैभव', छिन्दवाड़ा**

समयसार पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन अब whatsapp पर भी

आपको यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि अब आप ग्रंथाधिराज समयसार पर डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन नियमित सुन सकते हैं। दिनांक 1 जुलाई 2017 से प्रतिदिन whatsapp पर क्रमश: एक प्रवचन भेजा जा रहा है।

आप भी यदि अपने whatsapp पर प्रवचन प्राप्त करना चाहते हैं तो कृपया हमारा whatsapp नम्बर **7297973664** को PTST प्रवचन के नाम से अपने मोबाइल में SAVE कर लें और आप अपना नाम व स्थान लिखकर हमें whatsapp पर भेज दें।

हम आपका नम्बर हमारी प्रवचन लिस्ट में जोड़ लेंगे। ध्यान रहे कि यदि उक्त नम्बर 7297973664 आपके मोबाइल में SAVE नहीं होगा तो हम जो प्रवचन भेजेंगे वह आपको प्राप्त नहीं होगा। यदि आप अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी प्रवचन की सुविधा देना चाहते हैं तो उन्हें भी यह नम्बर SAVE कराकर हमें उनका नम्बर लिस्ट में जोड़ने हेतु whatsapp पर भेज दें। **– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

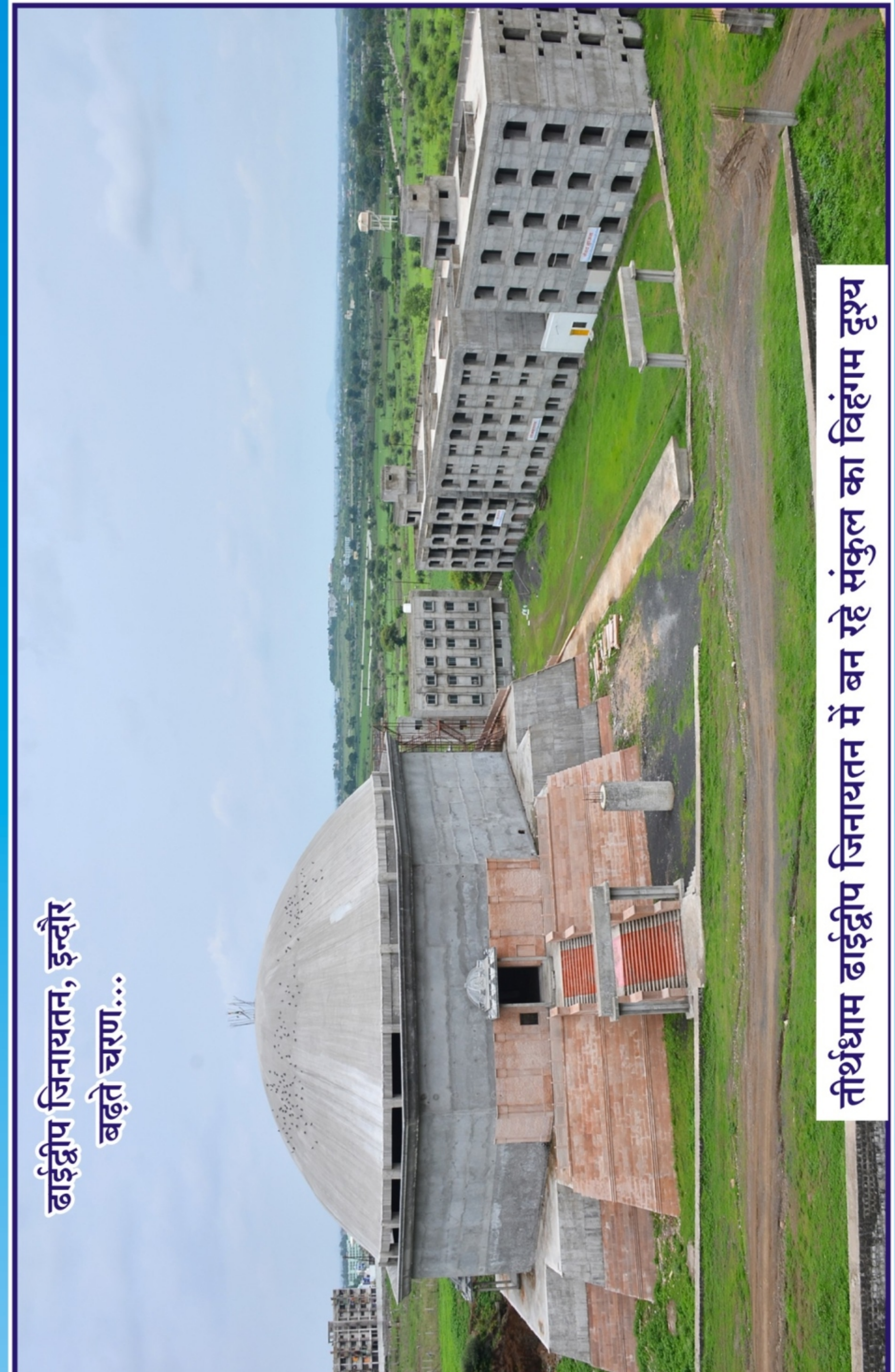

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बन रहे विश्व के सबसे बड़े जैन सिंहद्वार का दृश्य
(निर्माता–श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल, पूना)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह–सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**